

DPN 6530

Title : पाण्डव गीता
PĀNḌAVA GĪTĀ

Run. No. 7255

Cat. No.

Micro. No.

Subject दर्शन Philosophy Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 14.8 x 5.8

Folios 8

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

(2-9)
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

गङ्गायापनापनस्त्रं नारायणं सत्तुष्टैस्ततस्त्वानि । ५॥ नमो
नरुतकिल्विषवदनाम् माहुः पथाध्वनयसंनयनः पिवन् ॥
ॐ नमो उवाच ॥ नारायणं नाम नारायणं पुरिद्वयं ३॥
यितः पृथिव्यां । ननकं नमः । किं नारायणं चयं दनलः ॥ ४॥
तमाहुकवर्त्त ॥ ५॥ राधिका उवाच ॥ मद्यन्मम पीतकोषय
वासं श्रीवत्सकिं कोमुलं आसितार्गं । पुन्यात्मानं पूजयतीकार

10

तारु विष्णुवन्द सर्वलोकेकनार्थ ॥ श्रीमभेन उवाच ॥ जलो घम
 ग्रासवनाचनाधना विषालकाशाखिलविश्वमूर्तिना । समुद्रता
 येनवनाद्वृषित ॥ समस्तस्यमूर्तिगवान्प्रसीदतु ॥ अर्कन उ
 वाच ॥ अचिन्त्यमयकमनकमद्यतैविशुं प्रशुंकात्रलरुतशवि
 ना । उलासविस्मयविरावराविनी रुनिप्रपन्नास्मिगतिमहा
 स्मनी ॥ नकुल उवाच ॥ यदिगमनमधस्तात्कर्मपासान्व

२

७

द्वा रादिवकूलविलीन रुन्मयेपादकीट । किमिदं तमरिगत्वा
 तंगताया ननात्मा रुवतुमसहदिर्लुके न वरुकि न का ॥
 ॥ मरुद उवाच ॥ तस्य यत्कृतं तदस्य विष्णुन कुलत उम
 प्रजामेयपिकुर्वेत् किं तस्य पीडनमानम ॥ कतिनूवाच ॥
 स्वकर्मरुलनिदृष्टीयांयांथानि वृजा मारु । तस्यां तस्यां द
 पीकं न त्वयिरुकि दृशमुभ ॥ मादुवाच ॥ कष्टं न ता कष्टम

10

नस्मरन्ति न शोचन्ति पूनरुक्तिं न च । गरि न द द्राष्टु वेला नि क
पू रु विर्यं च मनु र्गु न क ता न न ॥ **॥** शी प शू वा च ॥ की ण प कि ष
मृ ग षू न ती सृ प षू न क ः पि न च म नू यं च पि य उ त्त ॥ स्ना ना
मु भं रु व नु क ण व त्व त्प सा न् त्व यी व रु कि न च ला व रि वा नि
ली च ॥ **॥** सूरु डा वा च ॥ उ का रि क षू ः स कृ त ः प्र ल मी द ण भ व म
धी न रि या ति कृ त्वा क षू प्र ल मी न पु न र्वा य ॥ **॥** अ रि स न्नु

3
3
3

5

नवाच ॥ (गमविन्द) (गमविन्द) रु न म रा न (गमविन्द) (गमविन्द) म क न्द क षू ।
(गमविन्द) (गमविन्द) न र्थ ग पा (न) (गमविन्द) (गमविन्द) न मा मि नि त्वा ॥
॥ धृ ष्ट शू म उ वा च ॥ श्री नाम ना रा य न वा स द व (गमविन्द) वे क
वृ म क न्द क षू । श्री क ण ता न न नृ मि द वि धू मी रा रि स मा न उ
उ ग ड षू त **॥** सा त्प कि न्वा च ॥ अ प्र म य रु न वि धू क षू दा भा द
ना चू त । (गमविन्द) न न स र्व ण वा स द व न मा मु त **॥** उ द्ध व उ

10

वाच॥ वासुदेवविष्णुश्च आनन्दवसूपासतः । कृषिता जातु वीती
 नः कृपं खनति दुर्मतिः ॥ (श्रीमद्वाच॥ अर्पणमीधं यना
 जनगृहः दिवाचनाशोपठिगच्छता च । यदि सि किंचित्सु कर्तुं
 तं मया ऊना दैनसु न कृतं न तु यत्तु ॥ ॥ सीजय उवाच॥ आर्त्ता
 विष्णुनिधिलाञ्जरीताः धानप्रयवाधिवृवर्तमानाः । स की
 र्त्तना नायल्लवमाहं विमूक इह खासुखिभो रुवन्ति ॥

४

५

॥ अकुरुत उवाच ॥ अहं हि नारायणं दासदासं दासमादासां सिद्धि
 दासदासः । अन्त्यान्तमीक्ष्य उगतान्ननालं तस्मादिदं धनं तनां
 लोकं ॥ विदुः उवाच ॥ वासुदेवस्य यत्तु कृतं ॥ ४ ॥ आकासं कृतं
 मानसा ॥ तस्य दासस्य दासाहं रुवन्तु नमोऽनुमतिः ॥ श्री
 मद्वाच ॥ विपरीतं सुकालं यत्तु विष्णोः । गच्छ वन्धुषु । शक्ति
 मां कृपया कृष्णं जनतां गतवन्तः ॥ ॥ श्रीमद्वाच ॥ यथा

10

रुताश्चक्रधनलदेत्यामुलाकुनाधनऊनाईनन। ततगतावेनिल
 र्यसुनालीका। (अपिदवस्यवत्रनकुली) ॥ कपडवाच॥ यऊम
 निसुलमिदमधूकेठरात्रमस्यार्थनैकमदनूयहचषचव।
 त्वहुत्यरुत्यपनिवात्रकरुत्यरुत्यरुत्यस्यरुत्य० तिमांस्म
 तलाकनाथ ॥ ॥ अश्वत्थामावाच॥ (अविन्दक) लवेऊनाईनवा
 सुदवविश्वं विस्वमधूस्तदनविस्वनूय। श्रीपद्मनारुपूत्र

5

राहमपद्मभक्तुनारायणचूतनृसिंहनभानमस्त ॥ कपडवाच॥
 नांन्यम्बदामिनगुलमिनविक्त्यामि। नान्यस्मनामिनरुजा
 मिनवाधुयामि। अकत्वदीयचनलद्वयमादकल। श्रीध्रीनिवा
 सपूत्रधाराहमददिदास्य ॥ ॥ धृतनाकुडताच॥ नभानम8 कानल
 वामनाय। नारायणायामितविक्रमाय। सात्रं चक्रासिमदा
 धनाय नभानुतस्मिपूत्रधाराहमाय ॥ ॥ गमन्धायवाच॥ त्व

10

भवमाता च पिता त्वमेव त्वमेव ब्रह्म सखा त्वमेव । त्वमेव
 विशाद्विलम्बित्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥ इत्यो धन
 उवाच ॥ जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः जानामि पार्ष्ण न च मे
 निवृत्तिः । कनापिद व न द्वादिस्ति न यथा नि यू का स्मि त
 थ कनामि ॥ यं उस्म गु ल दा ष न य क्ती त त्य त्वा त्म म ॥ नृ ह
 य न्ना रु वा न्ना न्नी म म दा षा न दी य त ॥ ॥ कृ प द उ वा च ॥ य ह्

5

नन्द (ग) विन्द मा भवान्क कं ग व । विष्णु ना द्वा षी कं ग वा
 स द व न मा मु त ॥ ॥ उ य द्वा थ उ वा च ॥ न मः कृ ष्णाय उ द्वा य
 व द्वा ल न क् मूर्त्त य । आ ग व ना य आ ग म य त्वा म द्वा ल न ल ग
 ति ॥ ॥ वि क ल उ वा च ॥ कृ ष्णाय वा स द वा य द व की न न्द ना य
 च । न न्द (ग) प क् मा ना य (ग) वि न्दा य न मा न म ॥ ॥ सो म द ह्
 उ वा च ॥ न मः य न मः क ल्या ल न म स्तु वि श्वे रा व न । वा म द्

॥ शत्रुदाज उवाच ॥ लारु सुखां ऊय सुखां कृत सुखां पना ऊय ॥
 यथा मिन्द्री वनम् ॥ मा द्दय सुखां ऊय नार्द्ध न ॥ ॥ गीतम उवा
 च ॥ ॥ गम कोटि दानं गुरु ॥ लष काशी ॥ माद्य प्रिया ॥ गयूग कल्य
 वासी ॥ सुमन्त्र तल्लु हिन लसदा नै ॥ गम विन्द ॥ गम विन्द तल्लु
 ल्यना मी ॥ ॥ अश्विन् वाच ॥ ॥ गम विन्द तिसदा स्नानै ॥ गम विन्द
 तिसदा ऊयै ॥ गम विन्द तिसदा क्षानै ॥ गम विन्द तिसदा कीर्तनै ॥

२६० पाण्डवगीता